शब्दों की आँखें

ऋषभ शुक्ला

गीत का आखिरी अंतरा जब गाया जाता है,

तो क्या गायक उदास हो जाता होगा क्या ?

या कि गीतकार लिखकर कलम ,

छोड़ देता होगा बिलखते पन्नों के कोनों पर।

मैंने पूछा उससे, उसने कहा “नहीं” ,

कलम की रूदाली, लेखक की चीख मार देती है,

लेखक हर कविता में रो कर आंसू बहा देना चाहता है,

जैसे वो कविता होती होगी उसकी अंतिम रचना।

ठीक वैसे ही आंखों के आखिरी बूंद में होंगे अंतिम शब्द।

पर इस विडंबना के साथ उसकी रचना,

ताउम्र अधूरी रह जाती है, नहीं होती पूरी एक भी कविता,

अंतिम अंतरा , अंतिम शब्द के साथ गुंजाइश होती है एक और रचना के वजूद की,

जो किसी रोज़ फिर से छलक कर पन्नों पर बिखर जाती है।

मैने फिर से पूछा क्या वो कभी ,

लिख पाता है अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना को?

क्या उसकी यात्रा कभी पूरी होती भी है?

उसने मेरी आंखों में ध्यान से देखा, और मुस्कुरा कर बोली,

“हां होती है” ।

पर इस मर्तबा मैने उसकी आंखों में नहीं,

अंतस के उस कमरे में चुपके से झांक कर देखा।

मुझे कमरे में बिखरे शब्द मिले,टूटी फूटी नज्में मिली,

रास्तों से टकराए ठेस खाए, चोटिल वाक्य मिले।

कमरे के दीवारों पर भीनी सी मुस्कुराहट भी मिली,

और शब्द पिरोते लेखक का अक्स उसकी आंखों में टिमटिमा रहा था।

वो पूरा था बिल्कुल पूरा , खोया हुआ,

अपनी प्रेमिका के सपनो में, अधजगी आंखें लिए शब्द ढूँढता ।

मैंने गौर से नहीं देखा उसको, गौर से देखने पर व्यक्ति अक्सर सतर्क हो जाता है,

मैं वापिस आया और जवाब उसने खुद ही दे दिया।

जो शब्द कई दफा चुप रहते हैं, आंखें बोल ही देती है।

रास्तों से चलता मैं बस उसकी बात समेटता रहा,

कि लेखक ढूंढता है अपने शब्दों को उसकी आंखों में ताउम्र,

ये पूरी यात्रा शब्दों से होकर आंखों में सिमट जाने की है।

उस गीतकार ने शायद सही कहा था,

“तेरी आंखों के सिवा इस दुनिया में रखा क्या है” ।

कलम और लेखक

कलम और लेखक के बीच की अजनबियत,

क्या कुछ बयां करती है उस लेखक के मानिंद?

ये इल्ज़ाम हमेशा लेखक पर क्यों लगे?

कलम को भी तो यूं सोचना चाहिए,

कि उसके और लेखक की दूरी सुई की नोंक जितनी है,

करीब आने पर चुभन है, दर्द भी है,

पर जो ना आए तो माथे की शिकन भी है,

और रवां होती दूरियों का इतिहाम भी।

तो फिर कलम की कश्मकश क्या है?

कलम की खामोशी का सबब भी तो पूछो,

लेखक की आँखें बता देंगी क्या?

पर वहाँ अनुगूँज है किसी तीसरे की।

जो कलम और लेखक के दरमियान है, फिर क्या है?

कलम चुक जाती है, बिखर जाती है पन्नो पर,

देर रातों की सिसकी में, खुद को निचोड़ फेंकती है,

लेखक के सारे जज़्बात ,उसके सभी हिस्से,

सारे अश्रुपूरित नेत्रों का ठंडापन, छूने भर से।

गुमगश्ता होते सारे हर्फ आयतों का रूप धरती हैं,

लेखक की चीख सुनाई कहां देती है इन कानों को,

कलम की खरोचें और रिसते घाव कहाँ ज़ाहिर हो पाते है।

शि…….

एक चौथा भी है उस कमरे में,

वक्त...

जो देखता है उन तीनों की ओर और पूछ बैठता है उन पन्नो से,

किसका प्रेम कामिल है?

लेखक की निगाहों में छिपे चेहरे की,

या फिर कलम और लेखक का इख़्लास,

जो करीब होकर भी कितने अजनबी से रहते हैं, ताउम्र।।

ऋषभ शुक्ला